द्वितीय अध्याय

'प्रिय शबनम' : वस्तु-विन्यास

द्वितीय अध्याय

'प्रिय शबनम!' : वस्तु-विन्यास ---

२.१ उपन्यास : स्वरूप --

साहित्य की सबसे अधिक लोकप्रिय विधा ' उपन्यास ' आधुनिक युग की देन है। जो स्थान प्राचीन काल में महाकाव्यों का था, वही आज ' उपन्यास ' का है।"[१] उपन्यास में दुनिया जैसी हो, उसे वैसी ही चित्रित करने का प्रयास किया जाता है।"[१] इसीलिए उपन्यास आज साहित्य का सबसे प्रमुख अंग बन गया है। "उपन्यास ही एक ऐसी विधा है, जिसमें लोकहित की भावना अन्य विधाओं की अपेक्षा ज्यादा कलात्मक एवं सशक्त रूप से उभरी है, क्यों कि जीवन और जगत् के प्रति छाया अपनी सम्पूर्णता में उपन्यास में ही चित्रित हो पाती है।"[२]

उपन्यास मानव-जीवन को हमारे सम्मुख अधिक उजागर करके रखता है। मानव-जीवन की विसंगतियों, विविधताओं, वैशिष्टयों और वैचित्र्यों को अधिक निकट से दिखाना इसका उद्देश्य है। प्रेमचंद से मोहन राकेश तक आते-आते हिन्दी उपन्यास में कार्य एवं कथन-शैली की दृष्टि से विराट अन्तर आया है। वैयक्तिक, समस्यापरक उपन्यास लिखना प्रारम्भ हुआ। इसमें बाह्य प्रतिकूल परिस्थितियों की विकृति एवं वैचित्र्य, पर प्रकाश डालकर आन्तरिक समस्याओंका व्यक्तिपरक विश्लेषण मिलता है।

२.२ कथानक : स्वरुप --

कथानक उपन्यास का मूलतत्व है। उपन्यास का समग्र रूप कथानक के ढाँचे पर विकसित होता है। कथानक का चुनाव और निर्माण उपन्यास का प्रमुख विषय

है । कथानक के समस्त अंगों का सुन्दर संगठन ,घटनाओं का समुचित विन्यास उपन्यास को सुन्दर बनाता है । उपन्यास के कथानक को तीन प्रधान भागों में बाँटा जाता है - प्रारम्भ,मध्य या विकास तथा परिणाम या समाप्ति । स्थान के विवरण लेखक के परिपक्व अनुभवों से ओत-प्रोत होने चाहिए और पारिवारिक तथा सामाजिक दृश्यों के विवरण ऐसे लगे कि हम उपन्यास नहीं पढ रहे है, वरन् वास्तविक जीवन के बीच में खडे हैं । पात्रों के आन्तरिक रहस्य का उद्घाटन आजकल के सफल उपन्यास का प्रधान गुण माना जाता है । कथानक में मौलिकता,प्रबन्ध-कौशल,संभवता,सुगठन और रोचकता आदि विशेषताओं का होना आवश्यक है ।

कथानक की मौलिकता,विषय की नवीनता,नवीन घटनाओं की कल्पना, वर्णन,संयोजन का ढंग कथानक के लिए महत्वपूर्ण है । कथानक की मुख्य कथा के साथ गौण कथा उपन्यास को सफलता प्रदान करती है । उपन्यास का वर्णन संभव लगे,घटनाएँ और कार्यों में संगति आवश्यक है । संभाव्यता तथा औचित्य के साथ वार्तालाप,वेशभूषा,वर्णन का भी स्थान रहे । आवश्यक बातों को उपन्यास के कथानक में रखकर अनावश्यक को त्यागना आवश्यक है । उपन्यास में रोचकता लाने के लिए अप्रत्यक्षित का संयोजन,जो आकस्मिक न हो,उसे संगत माना जाता है ।

इस प्रकार उपन्यास के कथानक में स्वाभाविकता एवं रोचकता के साथ-साथ सुगठितता का होना आवश्यक है । उसके साथ कथावस्तु में शृंखलाबध्दता आवश्यक है ।

२.३ ' प्रिय शबनम ' की कथावस्तु --

' प्रिय शबनम ' का नायक मंगल कोटद्वार के एक कस्बे में रहनेवाला युवक है । मंगल की माँ नित्य रामायण पढनेवाली धर्मप्राण महिला है । वह उससे बहुत प्यार करती है । माँ ने ही उसे पाल-पोसकर बडा किया है । उसके पिताजी ट्रक-ड्राइवर थे हमेशा घर से बाहर रहते थे, नगीना,बिजनौर और धामपुर रहते थे ।

कभी घर आते तो जेब में शराब की बोतल लेकर । माँ से गाली-गलोच करके पैसे लेकर चले जाते थे । औरत ,शराब और गालियाँ आदि को अपनी दुनिया मान बैठे थे । उन्होंने बिजनौर में एक औरत रख ली थी और वे वहाँ ही रहते थे । इसी कारण मंगल के माता-पिता एक-दूसरे से दूर हो चुके थे । मंगल की माँ स्वाभिमानी होने के कारण पति के आगे उन्होंने कभी हाथ नहीं फैलाया । मंगल तथा उसकी बहन के लिए माँ ने घर के बाहर चबुतरे पर पकौड़ियों की दुकान लगाकर उस कमायी से घर तथा मंगल की शिक्षा का खर्चा चलाती है । अभावों के बीच भी मंगल साफ कपड़े पहने,खोमचेपर न बैठे और अपनी शिक्षा अच्छी तरह करें,इसका ध्यान रखती है । वह चाहती है कि मंगल अपने बाप जैसा न बने ।

अंग्रेजी के अध्यापक मिस्टर मार्टिन के संस्कार और सहायता से मंगल मैट्रीक पास होता है । मार्टिन मंगल को आगे की पढाई के लिए अपनी विधवा बहन के पास इलाहाबाद भेज देते है । मंगल पढाई के साथ टयुशन और प्रुफ-रीडिंग, स्टुडेन्स यूनियन तथा फेडरेशन का भी काम करता था । गाँव से माँ और मुजफ्फर नगर से बहन सुक्खी (सुषमा) की चिट्ठी से मंगल को मालूम होता है कि सुषमा लाजो के भाई के साथ भाग गई है और मुजफ्फरनगर में आर्य समाजी रीति से शादी कर ली है ।

परीक्षा खत्म होते ही मंगल अपने गाँव कोटद्वार चला जाता है । माँ तीर्थाटन पर निकल गयी थी । माँ के प्रति वह करुणा से भर उठता है । सोचने लगता है - माँ को किसी से भी सुख नहीं मिला, न पति से न बच्चों से । वह उसी समय तय करता है, जब नौकरी लग जायेगी तो माँ को बहुत सुख देगा । लाजो- जो उसके बचपन की दोस्त है,जिसकी शादी कम उम्र में हुयी है । वह अपना ससुराल हमेशा के लिए छोड आयी है । मंगल उसे मिलने के लिए जाता है । लाजो मंगल को बताती है कि सुषमा उसके भाई के साथ भाग गयी,अच्छाही हुआ । क्यों कि मंगल की माँ सुषमा को खोमचे पर बिठाकर भजन-कीर्तन,महात्मा-सन्यासी की सेवा, प्रवचन,गीता-पाठ आदि में लगी रहती थी । सारा काम सुषमा को करना पड़ता

था । मंगल लाजो और उसकी माँ को आर्थिक सहायता का वादा करता है । मंगल की माँ तीर्थाटन से आ चुकी है,सुषमा की घटना से वह वाचाल,कमजोर,उदास और कुण्ठित हो गयी है । मंगल सोचता है कि जितना भी बन पड़ेगा वह माँ को सुख देने की कोशिश करेगा ।

मंगल आगे की पढाई मिस्टर मार्टिन और मिसेस क्लेयर की सहायता से पुरी करता है । मार्टिन उसको बम्बई सेंट थामस कॉलेज में नौकरी के लिए भेजते हैं । बम्बई आकर अपने गाँव का एक लड़का बच्चन जो कि वसई की फैक्टरी में काम करता है - उसके कमरे में ठहर जाता है । वह एक चाल थी अँधेरे कमरें,कीचड,गन्दगी तथा बदबू आदि का वहाँ साम्राज्य था । अत: मंगल को कोटद्वारवाले अपने घर की याद आती है मगर नौकरी,परिवार,लाजो तथा उसकी माँ की जिम्मेदारी के कारण मंगल ने रहने की सुविधा नहीं देखी । पास में ही उसे दूसरा कमरा मिल गया । सेंट थॉमस कॉलेज में मंगल एक अजनबी की तरह रहता है । दूसरे प्रोफेसरों, लड़के-लड़कियों की तुलना में अपने को वह बहुत सामान्य,बहुत हीन महसूस करता है ।

कुछ दिनों बाद फोर्थ इयर की स्टुडेन्ट शबनम से मंगल की मुलाकात हो जाती है । शबनम के पिता अपने दिनों में आई.एन.ए.के कप्तान रह चुके हैं, एक विवेकशील व्यक्ति जिन्होंने सुभाष को आजादी के समय सहयोग दिया है । वर्तमान में एडवोकेट का काम कर रहे हैं । ऐसे आदर्श पिता के संस्कारों में पली मातृविहीन शबनम कुण्ठाओं और समस्याओं से बाहर निकालने में मंगल की सहायता करती है । मंगल का पुरूषपन,मानवीयता और अध्ययन-अध्यापन आदि से प्रभावित होने के कारण वह मंगल से प्यार करती है । उसकी नजरों में पैसा ही सब कुछ नहीं है । धीरे-धीरे दोनों एक-दूसरे के निकट आ जाते हैं और मन ही मन भविष्य के सपने देखने लगते हैं ।

एक दिन मंगल शबनम के घर जाता है । उसका घर,रहन-सहन,परिवेश आदि को देखकर उसे लगता है कि वह शबनम के साथ अन्याय कर रहा है । मन-ही-

मन वह अपना वसईवाला कमरा-शबनम का घर,अपने पिताजी-शबनम के पिताजी आदि की तुलना करता है। इनके कारण उसके मन में कॉम्प्लैक्स निर्माण हो जाता है। मंगल के कॉम्प्लैक्स पर प्रकाश डालती हुयी शबनम कहती है --"आर्थिक सम्पन्नता और प्रतिमा में कोई तुलना नहीं हो सकती मंगल,तुम्हें यह मैं समझाऊँ ? बांद्रा और कोलाबा की कॉल गर्ल्स मेरे डॅडी से ज्यादा कमाती है,तो क्या वे मेरे डॅडी से अधिक सम्मानित है ? सम्मान का सम्बन्ध व्यक्ति की प्रतिमा,उसकी ईमानदारी और सच्चाई के साथ जुडना चाहिए..... ।"[३]

एक दिन शबनम अचानक मंगल के घर आती है। मंगल की माँ कुछ ही दिन पहले बम्बई आ चुकी थी। शबनम माँ के पैर छुती है उसी वक्त शबनम को अपनी माँ की याद आती है।मंगल और शबनम वरसोवा के किनारे घुमने जाते है। तब शबनम शादी की बात चलाती है। शबनम के चली जाने के बाद मंगल माँ को शबनम के बारे में पूछता है। माँ कहती है शबनम से उसे कोई शिकायत नहीं है, मगर रिश्ते बराबरी में होते है। और शबनम के पिताजी,उसके संस्कार ,परिवेश, आर्थिक परिस्थिति आदि बातों को लेकर माँ मंगल को समझाती है। मंगल भी सोचता है कि शबनम उसके जिन गुणों के कारण आज आकर्षित है वह कल नष्ट भी हो सकते है। हरे-भरे लॉन,विश्राम और विलासिता की बातें दूसरे वर्ग की है। मंगल को ऐसे विचारों से उस रात नींद नहीं आती है।

दूसरे दिन सुबह ही शम्मूदा मंगल के घर आते हैं। शम्मूदा जनसेवक है, शिवाजी कॉलेज के रिटायर प्रोफेसर है रिटायर होने के बाद पूरा समय पार्टी को देनेवाले बम्बई केन्द्र के नेता है। उनके पिताजी जमींदार थे। शम्मूदा कॉलेज के दिनों में क्रान्तिकारी,देशभक्तों में सामील हो गये थे। बचपन में विवाह कर दिये जाने के बाद भी मोह में नहीं बन्धे। शम्मूदा की पत्नी गाँव के उनके दोस्त के साथ भाग गयी। जायदाद रिश्तेदारों ने हडप ली। उनके भाईने पुलिस की हैरानी से तंग आकर आत्महत्या कर ली,उनके अनाथ बच्चे दवा पानी के लिए तडप-तडपकर मर गये। शम्मूदा पर इसका कोई भी असर नहीं हुआ। वह कहते-

"अपने लोगों को सुखी बनाने के लिए इतना मुआवजा तो चुकाना ही पड़ेगा । यह तो कुछ भी नहीं है । बड़ी चीज के लिए बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है ।" [४]

मंगल शम्मूदा के सामने शबनम के प्यार और उसके साथ शादी की बात रखता है । शम्मूदा कहते हैं-"यदि तुम्हारी इस अनिश्चित जिन्दगी को कोई स्वीकार कर रहा है तो उसे मना कैसे करोगे ?" [५] उस दिन शम्मूदा ने भी अपनी व्यक्तिगत बात मंगल को बता दी कि उनके जीवन में कुछ ऐसा ही मौका आया था । किन्तु हम जैसे लोगों को विवाह के चक्कर में नहीं पड़ना चाहिए क्यों कि शादी बन्धन होता है । इसीलिए नैसर्गिक इच्छाओं को दबाना चाहिए । शम्मूदा वरसोवा के पास कोलीवाड़ा में पार्टी का काम शुरु करना चाहते थे, और मंगल को वहाँ स्वतंत्र रूप से काम करने को कहने आये थे । तब मंगल को लगा कि वह शबनम के लायक बनते जा रहा है । शबनम को अपनी भावना,जीवन की प्रेरणा, शक्ति बताकर मंगल कहता है कि इन सभी को लेकर शोषित लोगों के लिए साधनहीन सर्वहारा और अपनी जड़ों से उखड़े हुये लोगों के लिए वह काम करेगा । शबनम को लेकर मंगल अनेक सुख-स्वप्न देखता हुआ निर्णय कर लेता है कि उसे शबनम को पाना है ।

एक दिन कॉलेज में लाजो का तार मिलता है कि वह दूसरे दिन बम्बई आ रही है । दूसरे दिन लाजो अपनी मरी हुयी बच्ची को लेकर बंबई पहुँच जाती है । मंगल उसके रहने का इंतजाम बच्चन के यहाँ करता है । मंगल बच्चन के प्रति कृतज्ञता से भर उठता है । लाजो कुछ ही दिनों में सहज हो गयी । स्त्री में अपने को प्रदर्शित करने की प्रवृत्ति होती है । लाजो ने मंगल पर प्रभाव डाल दिया और मंगल भी इसी प्रवाह में बह गया । मंगल की दिनचर्या ही बदल गयी । अब मंगल कॉलेज छुटनेपर सीधे वसई जाता था,और लाजो उसका इन्तजार करती थी । लाजो के लिए एक खोली की व्यवस्था की गयी है । मंगल ने वहाँ राशन-पानी का प्रबन्ध कर दिया है । इसी व्यस्तता के कारण मंगल का शबनम से मिलना कम हो जाता है । एक दिन शबनम के पुछनेपर मंगल बहाना बनाकर बोलता है --"आजकल पार्टी का काम बहुत बढ़ गया है । तुम जल्दी ही देखोगी देश के कोने-कोने में एक विस्फोट

होगा ..... उस विस्फोट की आग में वह सब जल जायेगा जो जड़ और पुराना हो चुका है । सारे अन्याय,सारे शोषण और सारे भ्रष्टाचार इसमें भस्म हो जायेंगे ... तुम्हें खुशी होगी कि इस महान परिवर्तन में तुम्हारे मंगल का भी योग होगा - चाहे वह कितना ही साधारण क्यों न हो ।"[६] शबनम मंगल के प्रति गौरव का अनुभव करती है । मंगल भी पाता है कि शबनम की उसके प्रति कितनी निष्ठा,कितनी भावनाशीलता है ।

लाजो हमेशा मंगल की प्रतीक्षा करती रहती है,अभावों के बिच पले मंगल को यह प्रतीक्षा अच्छी लगती है । उसे पारिवारिकता का अनुभव होता है और लगता है कि लाजो उसके वर्ग की है । तब शबनम की याद आती- शबनम को. उसके प्रति प्रेम,सम्मान और सहानुभूति है । माँ की बात याद आनेपर उसे लगता है कि शबनम के साथ जिन्दगीभर चलना नहीं होगा । लेकिन जब वह शबनम के सामने होता है तो अपने को उसके योग्य समझाता है,कभी हीनता का भाव उसके मन में नहीं उपजता । वह अपने को हर तरह से उसके योग्य पाता है । और कभी अपनी हीन ग्रंथी से सोचता है कि,लाजो आँखों में अनुरोध लेकर सारी सम्भावनाओं के साथ सामने खड़ी है । उसे देखकर उसकी मानसिकता,आकर्षण,निष्ठा दृष्टि सब बदल जाती है । इस प्रकार मंगल द्वन्द्वात्मक स्थिति से गुजरता है ।

शबनम और मंगल में वर्ग की बड़ी गहरी खाई है । शबनम में आज उत्साह है,कल रहेगा या नहीं ? शबनम की आँखों में उठे रहने के विचार से तथा शबनम को छोडने से उसकी त्याग भावना से अपनी और पार्टी की नजरों में वह उपर उठा रहेगा । लेकिन असल में मंगल को लाजो का मौन आमंत्रित,आकर्षित कर रहा था । दोनों को अपनाने का विचार भी उसके मन में कभी-कभी आता है मगर शबनम के डेडी,उनका त्याग और उनके प्रति विश्वासघात नहीं करना चाहता था । लाजो के प्रति अपनापन और संस्कार के परिणाम स्वरूप,मंगल-लाजो सारी झिझक,सारा संकोच छोडकर एक-दूसरे में समर्पित हो जाते हैं और वे बिना समारोह,बिना मध्यस्थ लिये शपथ-ग्रहण कर लेते हैं ।

परिस्थिति,तथा परिवेश की दूरी,जिन्दगी की अनिश्चतता आदि बातों का बहाना बनाकर मंगल शबनम के साथ शादी करने से इन्कार करता है। कहता है --"जिनके पास अगले दिन का राशन तक नहीं। पहनने के लिए दो जोड़ी कपडे नहीं होते। दवाई के लिए चार पैसे नहीं होते .. तुमको उस वातावरण में ले जाना मेरा मन नहीं मानता,शबनम।" शबनम उसे कहती है ---"हमारे देश में प्यार की परिणति विवाह में ही होती है,तुम्हारे साथ रहकर मेरा भी समाज के लिए कुछ योग बन सकता,तुम एक बहुत ऊँचे आदर्श के लिए यह निर्णय ले रहे हो... मैं कहूँ मंगल इससे तुम्हारे प्रति मेरा प्यार बढा ही है.... । मैं तुमपर गर्व करती हूँ.... मेरी अशेष शुभ-कामनाएँ तुम्हारे साथ है।" ७

मंगल मन-ही-मन शबनम से विदा लेने के कारण दुहराता है --"क्रान्ति-वादिता और उसके कारण उत्पन्न जीवन की अव्यवस्था का बहाना ओढकर मैंने तुमसे अपने को मुक्त कर लिया अवश्य,लेकिन तुमसे मुक्त होने का असली कारण यह तो नहीं ही था। लाजो के साथ सीमा से आगे बढ गये सम्बन्ध,अपने परिवेश के संस्कार और तुम्हारी आँखों में उठे रहने की एक अदृश्य इच्छा - इन सबने मिलकर मेरे जीवन की चूले हिला दी थी शबनम।" ८

मंगल की जिन्दगी में यहाँ से मोड आता है। पाँच सौ रूपयों में दोनों जगह का खर्च चलाना मंगल के लिए कठिण बन जाता है उसकी एक टाँग वरसोवा में रहती है तो दूसरी वसई में। पुलिस का भय,जेलजाने के बाद लाजो की देखभाल की समस्या तथा लाजो के पेट में पल रहा उसका बच्चा आदि चिंताओं से छुटकारा पाने के लिए लाजो को वरसोवा में माँ के पास रख देता है। उसी दिन शाम मंगल को पुलिस पकडकर ले जाती है। उसे दो दिन पलटन रोड पुलिस स्टेशन रखकर आर्थर रोड जेल भेज दिया जाता है। वहाँ उसे शम्भूदा मिल जाते है। एकान्त स्थान में शम्भूदा अपने बारे में सबकुछ बताते है। उनके बचपन से क्रान्तिकारी विचार थे, उन्हें समाज से,नीति-नियमों से बडी शिकायत थी। मैट्रिक के बाद वे शहर आये तो देखा कि जिन-चीजों से वह नफरत करता है वे तो यहाँ कहीं ज्यादा और बडे

पैमाने पर हैं। इसमें भी कुछ लोग ऐसे थे जो युवकों को दिशा-निर्देश करने, अन्याय का विरोध करने, शहीद की भावना निर्माण करने का काम करते थे। शम्भूदा अपनी प्रखर बुध्दिमत्ता एवं तार्किकता का उपयोग करके, कॉलेज में भाषण देकर एक अच्छा कार्यकर्ता बन जाते हैं। छात्र उनसे प्रभावित हैं एक लडकी विजया घोषाल, उनसे प्रभावित होती है। शम्भूदा उसे लेकर सपने सँजोता रहता है, मनसूबे रचता रहता है, दिन-रात दिवास्वप्नों में खोया रहता है।

कॉमरेड रॉबिन मुकर्जी उनसे बुलाकर बताते हैं कि वह लडकी विजया घोषाल 'घोषाल जूट इंडस्ट्रीज' के मालिक माणिक घोषाल की नातिन है, वह दूसरे पार्टी के लिए जासूसी का काम करती है। शम्भूदा को बहुत धक्का पहुँचता है। शम्भूदा होटल-सी 'क्यू' में जाकर, देखते हैं तो वह लडकी अपने अय्याशी दोस्तों के साथ नशे में धुत्त होकर अंग्रेजी धुनों में शोर शराबा कर रही थी। रॉबीन कहते है --"दूसरे वर्ग में जाकर प्यार करने की सुविधा तुम्हें नहीं मिल सकती, इसके पहले मिस मनोरमा, केतकी चटर्जी आदि के साथ शम्भूदा के सम्बन्ध बताते हैं। तुम्हें अपनी-सी साथिन मिले तुम विवाह कर डालो, पार्टी और रोमान्स एक साथ नहीं चलता, पार्टी मैन सबका होता है।"[९]

मँगल की जेल से रिहाई हुयी, वरसोवा लौटा तो देखा कि घर में महाभारत हो गया था, घर दो भागों में बँट गया था। माँ ने लाजो को धर्म बेटी मानने के कारण लाजो तथा मँगल के सम्बन्ध में वह अधर्मता देखती है। इसी कारण लाजो को बहु मानने से इन्कार करती है। परिणामस्वरुप दोनों में हमेशा महाभारत छेडा रहता है। खरी-खोटी, गन्दी-गन्दी गालियाँ, ऊँची चिल्लाहट, शोर-शराबा, किवाडों को शोर के साथ खोलना-बंद करना, बडबडाहट आदि मँगल के घर में चलता रहता है। इन दोनों के बिच पिसता मँगल किसी का भी पक्ष नहीं ले सकता है। लाजो के पेट में पल रहा मँगल का बच्चा तथा लाजो के कारण ही मँगल जेल गया यही कारण बताकर अम्मा लाजो को कोसती है और पिटती रहती है। तब मँगल को लगता कि --"कूडे और गन्दगी के ढ़ेर पर पडी हुई एक लावारिस लाश। जिस पर हर गली का कुत्ता पेशाब कर जाता है ....

एक आदमी इतना विवश जीवन भी जी सकता है क्या ?"[१०]

इस झंझट से आराम पाने के लिए तथा बचने के लिए मंगल ज्यादातर घर में बाहर रहने की तथा पार्टी के काम में व्यस्त रहने की कोशिश करता है। इन सबका दायित्व अपनेपर लेकर मंगल अपने को अपराधी मानता है। इस समय उसे शबनम की बहुत याद आती है। लेकिन सन्तोष की साँस इसी कारण लेता है कि लाजो की जगह अगर शबनम होती तो अम्मा उससे भी लड़ने के बहाने खोज लेती, तब वह शबनम की नजरों में गिर जाता।

मंगल को शबनम के विवाह का निमंत्रण मिलता है। पति का नाम था स्क्वाड्रन लीडर अमर घई। मंगल शबनम के सुखी और समृध्द जीवन के लिए अशेष शुभकामनाएँ देता है और दोनों के सुखी दाम्पत्य जीवन के दिवास्वप्न देखता है। वह दिन उत्साह से गुजर जाता है।

रात एक बजे जब वरसोवा पहुँचकर देखता है कि लाजो दर्द से तड़प रही है,अम्मा पड़ोसन से पचास रुपये लेकर कोटद्वार चली गयी है। लाजो नानावटी अस्पताल में एक लड़की को जन्म देती है। आठ दिन बाद लाजो को घर लाया गया है।

कुछ ही दिन बाद मंगल एन.सी.सी.कैम्प के लिए जाता है। नागपुर में मंगल को खुद को जाँचने,परखने का वक्त मिलता है। बचपन का अभावग्रस्त जीवन शबनम के साथ हरियाली जिन्दगी,सुन्दर स्वच्छ जिन्दगी का सपना आँखों में पलता रहा,वह अधूरा ही रह गया,इसका कारण शबनम के प्रति उगी हुई हीन भावना एवं लाजो के मांसल आकर्षण है। फिर अम्मा तथा नारी स्वभाव के बारे में सोचता है --"कौन-सी गहरी चुभन है जो अम्मा को कचोटकर रख देती है ? इतनी भक्ति,इतना कीर्तन,तीर्थस्थान-यह सब कहीं ढकोसला तो नहीं है ? कहीं किसी गहरी चोट और उसके आन्तरिक दर्द को छिपाने का यह बहाना तो नहीं है ?" [११]

नागपुर से वापस लौटकर मंगल देखता है कि बिमार पिताजी को लेकर अम्मा कोटद्वार से वापस आ जाती है। जिस दिन माँ ने घर में पैर रखा उस दिन से लाजो मुन्नी को लेकर बच्चन के यहाँ चली जाती है। मंगल पिताजी से दस-बारह वर्षों बाद मिल रहा है,उनकी आँखों में भय,करुणा,जिज्ञासा और आत्महीनता का भाव है। मंगल लाजो को समझाकर वापस लाता है। घर आते ही अम्मा तथा लाजो का झगड़ा आरंभ होता है। रात को लाजो ने अम्मा के बारे में बताया कि —"तुम्हारी अम्मा,तुम्हारे बाप के घर में अपने आदमी को छोड़कर बैठी थी। उसने तुम्हारे बाप की पहली औरत को जहर देकर मारा था और तुम्हारे बाप के घर में चार महीने बाद तुम्हें जना था ... तुम्हें यह भी पता नहीं है कि तुम किसके बेटे हो,इस बाप के या उस बाप के।"[१२] इस मानसिकता में मंगल लाजो के साथ बिताये क्षणों को लेकर अपने को दोषी मानता है। अगर वह शम्भूदा जैसा चरित्रवान होता तो लाजो के आकर्षण में आगे न बढ़ता।

एक दिन मंगल ने कॉलेज से लौटने पर देखा कि लाजो और मुन्नी घर में नहीं थे। पुछने पर भी अम्मा-पिताजी चुप रहे थे। पासवाले जगतबाबू ने बताया कि हररोज की तरह माँ और लाजो में कहा-सुनी हो गयी, बात बढ़कर मारपीठ तक आ गयी,अम्मा ने किरोसीन से भरी बोतल लाजो के सिर मारी,काँच के टुकड़े सिर में गहरे उतरने के कारण उसे नानावटी अस्पताल में भरती कर दिया है। मंगल अस्पताल पहुँचता है। लाजो का ऑपरेशन किया गया है। मंगल वापस लौटते वक्त अम्मा और पिताजी को पुलिस के हवाले करने को तथा उन दोनों का खून करके लाशों वरसोवा के समुद्र में बहाने का विचार करता है। लेकिन घर आने से पहले अम्मा तथा पिताजी कहीं निकल गये थे,चिट्ठी में घर वापस न लौटने के बारे में लिखा था।

दो हफ्ते बाद लाजो अस्पताल से घर आयी। अब वह थोड़ी खुश और शांत रहने लगती है। मंगल सोचता है कि वह सब कुछ भूलकर नये सीरे से जिन्दगी को जियेगा। अगर थोड़ी सहज हो जाने पर लाजो की माँगे बढ़ने लगी सिनेमा,

12698

A

होटल,कपडे,सैर आदि । इतना भी ठीक है मगर अम्मा-पिताजी को बात-बातपर कोसना,अब वह मंगल को भी खरी-खोटी सुनाने में नहीं हिचकाती थी । इस तरह लाजो तथा मंगल की नोंक-झोंक बढती रही । एक - दूसरे की खाल खींचने के मौके दोनों खोजने लगते हैं । मंगल कहता है --"यदि तुम व्यक्ति को अपनी मानसिकता के अनुकूल नहीं पाते तो उसके प्रति तुम्हारा दैहिक आकर्षण भी समाप्त होने लगता है ।"[१३] धीरे-धीरे नोंक-झोंक गालियों में बदलने लगती है और गालियाँ मारपीठ में । घर के सामने बैठकर लाजो मंगल के पूरे खानदान को कोसती रहती है और हर बाद झगडकर कभी गाँव तो कभी नई बनायी हुयी सहेलियों के पास जाती है । एक बार ऐसे ही झगडकर वह अपने पुराने पति मूलचंद के पास चली जाती है ।

मूलचंद मंगल को मिलने आता है,वह बताता है कि लाजो पाँच साल से उसे मिलती आती रही है,इस बार वह उसी के पास ही रहना चाहती है । मंगल से यह पूछने पर कि लाजो उसके साथ रही है और उससे लाजो को एक बेटी भी है,मूलचंद उत्तर देता है --"अगर घर में आपकी लडाई हो जाये तो आप खाना नहीं खायेंगे क्या ? घर से लडकर आदमी होटल में खाना खा लेता है । मास्साब होटल में खाने का बिल भी तो चुकाना पडता है कि नहीं ।"[१४] मूलचंद को तीन सौ पगार मिलती है, उससे घर तथा लाजो का अनावश्यक खर्च नहीं चला सकता । इसी कारण वह मंगल से महावार सौ रुपये चाहता है,वह ब्लैक-मेलिंग करता है । मंगल सौ रुपये देने का वादा करके अपनी जान छुडा लेता है । बदल में मूलचंद आस्था से अपना कोई सम्बन्ध नहीं रखना चाहता है । तबसे आस्था बेटी ही मंगल के जीवन का सहारा बन जाती है ।

मंगल देखता है कि मूलचंद जैसा आदमी जिसके प्रति अन्याय हुआ है फिर से अच्छी जिन्दगी जीने की कोशिश कर रहा है तो वह निर्णय लेता है कि -- "किसी भी बिन्दुपर आकर जिन्दगी शुरु की जा सकती है । बस इसके लिए ईमानदारी चाहिए और चाहिए एक संकल्प शक्ति ।"[१५]

आस्था और मंगल एक दिन शाम को वरसोवा के सागर किनारे टहल रहा

था कि अचानक शबनम से भेंट होती है। वह अपने मुन्ने को लेकर आयी है। शबनम के पिताजी गुजर चुके है, पति बंगलादेश-मुक्ति संग्राम में लापता है, शबनम चार साल से उसकी प्रतीक्षा कर रही है। शबनम मंगल से मुन्नी का नाम, उसकी माँ के बारे में पुछती है। मंगल कहता है, मुन्नी की माँ इस दुनिया में नही है। शबनम के साथ नयी जिन्दगी शुरु करने की एक आशा मंगल के मन में फिर जन्म लेती है। लेकिन मंगल का विवेक कहता है कि शबनम को अपमानित करने का तुम्हें कोई अधिकार नहीं, एक बार कर चुके हैं। विवेक के एक सिरे से शम्भूदा की एक बात उसे याद आती है --"सफलता की माप यह नहीं है कि तुमने जिन्दगी में कितना पाया। सफलता की माप यह है कि तुमने कितना दिया। विशेष यह है कि तुम्हारे अनुभवों की गुणवत्ता क्या है, उनका स्तर क्या है। सब लोग गलतियाँ करते हैं, लेकिन उन गलतियों से सीखना और भविष्य में उन्हें न दोहराना ही बड़ी बात है।"[१६] शम्भूदा के और भी विचार उसे याद आते हैं। मंगल आस्था को उसके पराजित दिनों की उपलब्धि मानकर उसे बहुत सहेजकर वह रखना चाहता है।

वह शबनम से कहता है कि तुम पति की प्रतीक्षा से थकन जाये, अकेलापन, महसूस न हो, निराश न हो, तुम्हारी प्रतीक्षा सफल हो, पति के प्रति निष्ठा सार्थक रहे, अगर अकेलापन, निराशा महसूस होने लगे तो --"मेरे और इस बस्ती के इन बीसियों लोगों के बीच तुम अपने लिए एक सम्मान पूर्ण स्थान हमेशा पाओगी। मैं तुम्हारी भावना जानता हूँ। इसीलिए जोर देकर कह रहा हूँ शबनम।"[१७]

अब मंगल ने भी यही निर्णय लिया है। बरसोवा के पास मछुआरों की बस्ती में बड़ी अशिक्षा, गरीबी, विषमता और मजबूरी है। मंगल उन्हें इस शोषण से बचाने के लिए व्यक्तिगत प्रयास करता है। वह शबनम से कहता है -- "शबनम, मैं इनके जीवन में प्रवेश कर सकूँ, इनकी छोटी-मोटी-सहायता कर सकूँ, इनके जीवन की कुछ असंगतियों को कुछ अंश तक दूर कर सकूँ, इनके बीच में अपना अस्तित्व पा सकूँ, तो मुझे बड़ा सुख होगा।"[१८]

ये लोग अज्ञान, शोषण और अधश्रध्दा से घिरे हैं। इसीलिए शराब, तस्करी और सस्ती ऐयाशी में फँस जाते हैं। मँगल उनके जीवन की असंगतियाँ नष्ट करके उनके बीच विश्वास, निर्माण करना चाहता है। वह कहता है --"अब जीवन का उत्तरार्ध आरम्भ होने को है, इस प्रहर में मुझ टूटे हुए व्यक्ति से प्रखरता की आशा तो व्यर्थ है, लेकिन अपनी बची हुई संवेदना का अर्घ्य ही यदि मैं अपने आसपास की इस बस्ती पर चढा सकूँ, तो मैं कहूँ मेरे लिए यही बहुत होगा।"[१९] इसी में वह अपने अस्तित्व की सार्थकता मानता है। मँगल अपने साथ काम करने के लिए शबनम को भी निमंत्रित करता है।

२.४ कथावस्तु की समीक्षा :

'प्रिय शबनम' देवेश जी का दूसरा उपन्यास है। इस उपन्यास की कथा छोटी ही है मगर लेखक ने इसमें दो युवा हृदयों के बीच खडी वर्गभेद की दीवार के माध्यम से उनके अलग हो जाने का ताना-बाना अत्यन्त कुशलता से बुना है। कथानक में एक संश्लिष्टता गहराई फैलाव और बारीकी है। उपन्यास में जिन्दगी के यथार्थ को पर्याप्त संजीवनी से उभारा गया है। जीवन का कटु सत्य, मानव-मन की आकांक्षाएँ, उनका विस्तार, उनकी प्राप्ति के मध्य की समस्याएँ, बाहरी और पारिवारिक सम्बन्धो के मध्य उपस्थित तनाव, संवेदना, बेलोसपन और लाचारियाँ आदि का चित्रण इसमें मिलता है। लेकिन ये बिन्दु सभी प्रश्नों का उत्तर नहीं दे सकते है। और लेखक ने भी इसे अनुत्तरीत छोड दिया है।

व्यक्ति में बचपन से ही कुछ आकांक्षा और अपेक्षाएँ होती है। उसमें सफलता प्राप्त करने के लिए परिश्रम के साथ सही परिवेश, संस्कार तथा मार्गदर्शन की आवश्यकता भी होती है। उपन्यास का नायक मँगल अपने संस्कार, मानसिकता और परिवेश बाहर निकलने की कोशिश अनेक बार करता है। परन्तु एक कमजोर और दुर्बल क्षण मँगल के जीवन में समस्याएँ खडा कर देता है। शम्भूदा के मतानुसार वह क्षण ही महत्वपूर्ण है, जिसे मनुष्य विवेक के साथ जीत लेता है।

उपन्यास के उतार में नायक मंगल की परिस्थितियाँ काफी परिवर्तित हो चुकी है , उसकी मानसिकता में परिवर्तन आ चुका है। इसका मतलब है कि मानसिकता भी परिस्थिति के अनुसार बदलती है।

उपन्यास के अन्त में मंगल फिरसे शबनम के साथ रिश्ता जोडने को सोचता है परन्तु मंगल के फिरसे शबनम के साथ सम्बन्ध उचित नहीं लगते क्यों कि अब भी वह पार्टी मैन है। इसीलिए अपने कार्य के प्रति अधिक ईमानदारी से समर्पित होना है। शबनम भी उसी प्रकार सम्पन्न है जैसे वह पहले थी ,एक बच्चे की माँ भी है। पिता के न रहने से स्थिति में परिवर्तन हुआ है। शबनम और मंगल पहले से टुट चुके हैं। फिर भी मंगल शबनम को कहता है --" मेरे और बस्ती के बीसियों लोगों के बीच तुम अपने लिए एक सम्मान पूर्ण स्थान हमेशा पाओगी।"[२०] यह वाक्य दुविधा निर्माण करता है,क्यों कि मंगल और शबनम के परिवेश को वे बस्तीवाले लोग कैसे सहेंगे, जिसमें लेखक ने स्वंय तर्क रखा था --" प्रत्येक सम्पन्न व्यक्ति अपनी जड़ों से भी तो नहीं उखड़ सकता।"[२१] लेखक कहते हैं कि " जनसेवक में वस्तुपरकता,चरित्र,दृढ संकल्प नहीं है इसी कारण वह अपनी तथा जनता की हानि करता है। यह वाक्य शम्भूदा के साथ मंगल पर भी लागू होता है मगर यह वाक्य दुविधा डालता है कि --" हम उनके लिए लड़ रहें है, जिनके पास अगले दिन का राशन तक नहीं होता। पहनने के लिए दो जोडी कपडे नहीं होते,दवाई के लिए चार पैसे नहीं होते। झुग्गी-झोपडियाँ और फुट-पाथोंपर उनका रहना होता है,अपने बच्चे के लिए कोई सुविधा नहीं होती, ऐसे लोगों की हिमायत करनेवाले हम अगर सारी सुविधाओं के साथ रहे,तो उन लोगों को कैसा लगेगा।"[२२]

ऐसे प्रसंगों के कारण पाठक दुविधा में पड़ते दिखाई देते हैं, चाहे वे प्रसंग कल्पना में भी क्यों न हो। मंगल और शबनम का परिणाय पाठक को सुखकर और पुलकित कर सकता है, किन्तु उस स्थिति में कहानी आगे नहीं बढ सकती थी तथा पार्टी के विचार भी पूर्ण नहीं हो सकते थे।

' प्रिय शबनम ' उपन्यास का निर्बल तथा कथावस्तु में संघर्ष निर्माण

करनेवाला पक्ष है लाजो । जो मँगल की बचपन की दोस्त है । उनका परिचय बचपन से ही घनिष्ट रहा है । इसीलिए लेखक ने लाजो की भेंट मँगल के साथ फिर से करा दी है । वह शबनम की प्रतिद्वन्द्वी पात्र है । शबनम के साथ पाठकों की सहानुभूति तथा संवेदना रहती है मगर लाजो के साथ किसी भी क्षण सहानुभूति नहीं जगती । इसका कारण लाजो का अपरिष्कृत,अशिक्षित हर प्रकार से सुरुचिबोध से रहित होना ही है । यों अशिक्षित व्यक्ति भी कभी-कभी अत्यन्त सहृदयी,स्नेही एवं उदार प्रकृति के होते देखे गये हैं, पर लाजो में उस प्रकार का कोई कण कभी नहीं उभरता । शबनम के पास सभी प्रकार की सम्पन्नता होते हुये भी उसको प्रदर्शित करने की प्रवृत्ति उसमें नहीं है,किन्तु लाजो चंचल तथा उच्छृंखल स्वभाव की है ।

इसके विपरित मँगल की माँ में द्वेषभाव होते हुये भी उसमें कहीं-न-कहीं किसी क्षण में किसी सात्विक भाव की झलक दिखाई मिलती है । अपने पुत्र को शिक्षित देखने और उसमें उन्नति और विकास के दर्शन कर पा सकने की उसकी कामना माँ में औदार्य और उदात्तभाव का ही परिचायक है । मँगल की माँ चाहती रही हो,उसके बेटे की जिन्दगी साफ और सीधी बनी रहे,उसमें ऊबड-खाबडपन न आने पाये । उन्होंने अपनी जिन्दगी में बहुत कष्ट झेले है । वह नहीं चाहती थी कि वह सब मँगल के साथ फिर दोहराया जाये । इसीलिए वह लाजो को बहू नहीं मान सकी है ,उसे कष्ट देती रही है । परन्तु पाठक के मन में लाजो के प्रति जरा भी सहानुभूति नहीं उभरती क्यों कि उसका चरित्र आद्योपान्त एक-सा रहा है - घोर स्वार्थी,कृतघ्न,उत्पाति और अव्यावहारिक । एक स्थानपर ही पाठक के मनपर लाजो संवेदना जताती है । लाजो बम्बई आती है तब मँगल उसे देखता ही रहता है --" लाजो को पहली बार मैं पहचान ही नहीं पाया । चेहरेपर छायी हुई मुर्दनी और शरीर इतना निढ़ाल कि जैसे किसी ने पूरा सत्व निकाल दिया हो । वह गुड्डी को कन्धे से सटाये थी । उसने मुझे देखा शायद पहचान गयी हो । उसने मेरी ओर हाथ जोड दिये, बोली कुछ नहीं ।" [२३]

ऐसे व्यक्तित्व से नायक के सम्बन्ध पाठक को अच्छे नहीं लगते है क्योंकि नायक की भावनाओं और स्थितियों के साथ पाठक भी जुड़ा होता है। मान ले दैहिक आकर्षण से नायक लाजो से सम्बन्ध जोड़ लेता है किन्तु नायक ही आगे कहता है --" लाजो मेरी आवश्यकता को पूरी नहीं करती एक फूहड़पन उसमें है जो मुझे बार-बार कचोटता है।"[२४] सम्पूर्ण उपन्यास में इसी प्रकार के कुछ बिन्दु है,जो पाठक की चेतना में जब-तब प्रश्न चिन्ह बनकर खड़े हो जाते है।

लेखक ने उपन्यास के पात्रों को ज्यादात्तर बम्बई महानगर में दिखाया है, फिर भी बम्बई के वातावरण का चित्रण कम मात्रा में करके मंगल का गाँव ' कोटद्वार ' तथा ' देहरादून ' आदि का वर्णन ज्यादात्तर किया है। जिसमें लैंसडाउन के वर्णन की तुलना में बम्बई का वर्णन फीका और अपर्याप्त प्रतीत होता है।

इस प्रकार " प्रिय शबनम " उपन्यास परम्परा से चली आ रही इस धारणा को तोडता है कि --" बड़े या उच्च तबके के लोग बुरे ही होते हैं और छोटे या निचले तबके के लोग नित्य अच्छे। कि सन्तोष,विवेक और संयम उच्च तबके में नहीं पाया जाता,यह निम्न तबके में ही देखा जाता है।"[२५] लाजो और शबनम के माध्यम से हम यही देखते हैं कि लाजो के साथ ही मंगल की माँ,उसके पिताजी अच्छे नहीं है। शबनम के साथ ही उसके पिताजी भी काफी भले है। मंगल की मार्क्सवादी वैचारिकता में खोखलापन दिखाई देता है परन्तु शम्भूदा पार्टी का सच्चा कार्यकर्ता है। उसका व्यक्तित्व और चरित्र सदाशयता से परिपूर्ण है। उनमें दृढता,ईमानदारी,सक्रियता और अपने लक्ष्य के प्रति निष्ठा है। वे कहते हैं कि --" लेखक,विचारक और राजनेता को हमेशा निर्बल का और प्रतिपक्ष का पक्षधर होना चाहिए। वह सर्वहारा के एक विशाल समुदाय को आधार देता है, विश्वास देता है उनमें चेतना जगाता है। उन्हें उनके अधिकारों का ज्ञान देता है। उन्हें अपने अधिकारों की लड़ाई के लिए तैयार करता है ... यही उसकी सही भूमिका है। और यह जरूरी नहीं कि यह तैयारी सामूहिक स्तर पर ही हो। वैयक्तिक

स्तर पर भी इसे किया जा सकता है।"[२६] इस प्रकार शम्पूदा के माध्यम से देवेश जी ने अपने मानवतावादी विचार पाठक तक पहुँचाने का कार्य किया है।

२.५ शीर्षक की सार्थकता --

'प्रिय शबनम' उपन्यास एक पत्रात्मक शैली में लिखा गया उपन्यास है। जिसमें उपन्यास का नायक मंगल अपनी छात्रा तथा प्रियतमा शबनम को दस वर्ष बाद पत्र लिखता है। इस पत्र में शबनम-मंगल का अंत:बाह्य जीवन पत्रात्मक ढंग से प्रस्तुत हुआ है। पत्र लिखते समय मंगल उसे प्रथमत: 'श्रीमती शबनम' न कहकर 'प्रिय शबनम।' कहता है, जो अपनापे को प्रकट करता है।

एक दिन शाम को वरसोवा की रेत पर मंगल अपनी बेटी आस्था के साथ घर बनाने का खेल-खेल रहा था कि अचानक अपने बेटे गुड्डू की उंगली थामे शबनम वहाँ आ पहुँची। अनजाने में मिलने के कारण दोनों एक दूसरे की ओर देखते ही रह गए। कुछ बोल नहीं सके। मंगल ने देखा कि शबनम में परिवर्तन हो गया है। चेहरेपर अब वह गुलाबीपन नहीं रहा, मुरझाकर पीला पड गया है। और उस शाम मंगल ने शबनम की करुण कहानी के बारे में जाना। उसका पति बांगला देश के मुक्ति संग्राम के समय से लापता है। तबसे अभी तक, चार साल बीत जाने के बाद भी वह उसके लौटने की प्रतीक्षा कर रही है। दोनों की ट्रेजडियाँ एक तरह से समान्तर चलती है। लाजो मंगल को छोड गयी और बच्ची के साथ वह अकेला पड गया है तो, उधर शबनम नियति के हाथों छली गयी है और बेटे के साथ अकेली पड गयी है।

इस मुलाकात के बाद मंगल शबनम के यहाँ दो बार जा चुका है। शबनम की दु:खान्तिका के लिए बहुत कुछ वह अपने-आपको जिम्मेदार मानता है। उसे भी आत्महीनता के सिवा कुछ नहीं मिला। पिछले दिनों में मंगल ने शबनम को अपने बारे में पूरा-पूरा कहाँ बताया था। अब एक लम्बा पत्र लिखकर चाहता है, अपने

विषय में उसे सब कुछ साफ-साफ बता दे, ताकि शबनम उसकी असलियत जान सके कि वह कितना छोटा,और क्षुद्र है। वह लिखता है --" तुम्हारे लिए मैं हमेशा आदर का पात्र ही बना रहा। इससे मुझे बडा संकोच होता है। बडी आत्म ग्लानि होती है।.... आज तुम्हारे सम्मुख खुल जाने को बडा मन करता है। मन कहता है यदि ऐसा हो गया तो मुझे प्रायश्चित करने जैसी शान्ति मिलेगी।" २७

फिर इसे लिखने के पीछे मंगल का हेतु भी यह है कि जिस तरह उसने सोचा है कि बरसोवा के अशिक्षित-शोषित मछुआरों के लिए वह कुछ करें,उसी तरह शबनम भी यह रास्ता पकड लें। इससे मन को बडी शान्ति प्राप्त होती है। फिर अप्रत्यक्ष रूप से इसमें यह भी संकेत है कि शबनम यदि चाहे तो फिर से जिन्दगी की शुरुवात नये सिरे से की जा सकती है। वह लिखता है -- "अपने पति के प्रति तुम्हारी निष्ठा सार्थक बने। लेकिन यदि प्रतीक्षा करते हुए कभी तुम्हारा मन उचट जाये,कभी तुम्हें अकेलापन महसूस होने लगे,कभी तुम निराश होने लगो,तो निराश मत होना,शबनम....।" २८

पत्र शैली में लिखे गये इस उपन्यास में कही भी अस्वाभाविकता नहीं है। बल्कि कहा जा सकता है कि पत्र-शैली के कारण ही यह उपन्यास बहुत प्रभावशाली बन पडा है। यह मंगल का ही पत्र है शबनम के नाम। इससे केवल मंगल का चरित्र मुख्यत: सामने आता है और लेखक का लक्ष्य भी यही है, क्यों कि वह उसके माध्यम से निम्न मध्यवर्गीय बुध्दिजीवी की उन ट्रेजडियों को प्रस्तुत करना चाहता है जो वर्तमान जीवन की विडम्बनाओं में उसकी नियति है।

मंगल कहता है --" मेरा यह पत्र,यहाँ तक आते-आते एक अच्छा खासा उपन्यास बन गया है। कहीं पढा था कहानियाँ सच नहीं होती,लेकिन उससे बड़ा सच और कहीं नहीं होता। मेरा जीवन भी कहानी बनकर रह गया है। कहानी पढना सुख देता है,लेकिन कहानी बनना बडा दर्दीला होता है। वही दर्द मुझे इतने लम्बे समय से कचोट रहा है,शबनम। और उसी कचोट को लिए मैं तुम्हें

लिखे जा रहा हूँ - इस विश्वास से कि शायद यह लिखना ही मेरे दर्द का मरहम बन जाये । अपने को कह डालना भी तो कभी कभी दर्द से मुक्ति पाना होता है ।"[२९]

इस प्रकार मंगल का शबनम के प्रति सम्बोधित पत्र हमें सीधे उसके अन्तर्जगत में पहुँचा देता है जहाँ हम उसकी संस्कार गत और मनोवैज्ञानिक ग्रंथियों को निरन्तर उलझाते हुये देखते हैं । जब वह अपना पत्र समाप्त करता है तब तक वह अपने पुराने संस्कारों से पूर्णत: मुक्त हो चुका है । पाठक की पूरी सहानुभूति मंगल को मिलती है । उपन्यास के रोचक हो जाने का यही रहस्य है ।

२.६ निष्कर्ष --

उपन्यासकार देवेश ठाकुर ने 'प्रिय शबनम' उपन्यास के बारे में कहा है --"'प्रिय शबनम' में मेरे एक अन्यतम मित्र की कथा है । इनका निस्संग भाव से लिखा जाना तथा इनके मुख्य पात्रों के चरित्र का विश्लेषण करना अपने समीक्षक के कारण ही संभव हो सका है । लेकिन इन व्यक्तिपरक कथाओं का सामाजीकरण करके मैंने इनकी प्रस्तुति की है । यही सामाजीकरण संभवत: इनकी लोकप्रियता का कारण भी रहा है ।"[३०]

डॉ.गोपालराय के अनुसार --"प्रिय शबनम" निम्न-मध्यवर्गीय व्यक्ति के सांस्कारिक संघर्षों की गाथा है । मध्यवर्गीय संस्कारों और कुण्ठाओं की जकड़ कितनी मजबूत होती है और उसमें फँसा हुआ मध्यवर्गीय मन कितना विवश और असहाय होता है इसका बोध कराने में 'प्रिय शबनम' अत्यन्त सफल कृति बन पड़ी है ।"[३१]

उपन्यास में बार-बार देवेश जी ने ईमानदारी, सहजता और मानवतावादी चेतना को महत्व प्रदान किया है । इसमें नैतिक मूल्य, चारित्रिक दृढता और संकल्पशक्ति को मान्यता चित्रित है । इसमें नायक मंगल के संघर्ष की सिध्दि तथा शम्मूदा के बलिदानों में आदर्श की पुष्टि हुयी है ।

इस प्रकार ' प्रिय शबनम ' की कथावस्तु में लेखकनेमध्यवर्गीय बुध्दिजीवी की त्रासदियों और उनका यथार्थ तथा जीवन्त जीवन ढालने का प्रयत्न किया है और उसमें वे सफल हुये है। दो युवा-प्रेमियों के एकत्र आने और वर्गीय मानसिकता के कारण अलग होने की समस्या को सफलता से चित्रित किया गया है। बचपन से अभाव और संघर्ष में पले-बढ़े मंगल का मध्यवर्गीय मन महानगर की उच्चवर्गीय सभ्यता से मेल नहीं खाता।

' प्रिय शबनम ' के शम्मूदा एक ऐसा चरित्र है जिन्होंने पार्टी के लिए अपना सम्पूर्ण समर्पण किया है। ' प्रिय शबनम ' मध्यवर्गीय बुध्दिजीवी की अन्तहीन पीडा और विषाद की कहानी है। यह फासलों और फसीलों की कहानी हैं। इस प्रकार ' प्रिय शबनम ' की कथावस्तु नूतन शैली में लिखा हुआ सफल प्रयोग है। शैली के साथ इसमें कथावस्तु का भी अपना महत्व है।

संदर्भ

१	कृष्णकुमार बिस्सा : साठोत्तरी हिन्दी उपन्यासों में राजनैतिक चेतना ।		पृ.९ ।
२	वही	वही	पृ.९ ।
३	देवेश ठाकुर	' प्रिय शबनम '	पृ.२२ ।
४	वही	वही	पृ.६५ ।
५	वही	वही	पृ.३० ।
६	वही	वही	पृ.३५ ।
७	वही	वही	पृ.४० ।
८	वही	वही	पृ.४१ ।
९	वही	वही	पृ.४६ ।
१०	वही	वही	पृ.५४ ।
११	वही	वही	पृ.५८ ।
१२	वही	वही	पृ.६२ ।
१३	वही	वही	पृ.७१ ।
१४	वही	वही	पृ.७७ ।
१५	वही	वही	पृ.८० ।
१६	वही	वही	पृ.८२ ।
१७	वही	वही	पृ.८४ ।
१८	वही	वही	पृ.८३ ।
१९	वही	वही	पृ.८३ ।
२०	वही	वही	पृ.८४ ।
२१	वही	वही	पृ.४६ ।
२२	वही	वही	पृ.४० ।
२३	वही	वही	पृ.३२ ।
२४	वही	वही	पृ.६९ ।

२५ सम्पा.डॉ.नन्दलाल यादव : देवेश ठाकुर : व्यक्ति ,समीक्षक और कथाकार पृ.२०७ ।
(डॉ.शंकर पुणतांबेकर : प्रिय शबनम: मध्यवर्गीय बुध्दिजीवी की एक अनूठी गाथा)

२६ देवेश ठाकुर ' प्रिय शबनम ' पृ.८२ ।

२७ वही वही पृ.८ ।

२८ वही वही पृ.८४ ।

२९ वही वही पृ.६६-६७।

३० प्रस्तुति - डॉ.मानुदेव शुक्ल : देवेश ठाकुर: प्रश्नों के घेरे में ' पृ.३० ।

३१ सम्पा.डॉ.नन्दलाल यादव : देवेश ठाकुर : व्यक्ति, समीक्षक और कथाकार । पृ.१७१ ।